पं. झाबरमल्ल शर्मा व उनके वैचारिक दृष्टिकोण

शोधार्थी- उमेश कुमार दिशोदिया
सिधानियां विश्वविद्यालय, बेरी-पचेरी
(झुंझनू-राजस्थान)

पं० झाबरमल्ल शर्मा राजस्थान की मरूभूमि में खेतड़ी तहसील के ग्राम जसरापुर में , पं० रामदयालु जी के घर में माता जमना देवी ने माघ शुक्ला नवमी को २३ जनवरी १८८८ ई० को पं० झाबरमल्ल शर्मा को जन्म दिया ।[१] जिनके पूर्वजों का निकास ग्राम मैणास से है। जो पं० मेमराज जी के वंशज कहे जाते हैं। शोधार्थी ने पं० झाबरमल्ल शर्मा के जन्म - स्थान को अपनी आँखों से देखा है । इनके पिताजी अपने समय के सुप्रसिद्ध संस्कृत पण्डित और चिकित्सक थे । जीवन के पिछले वर्षों में अपने गाँव जसरापुर में रहते हुए उन्होनें निस्वार्थ और निशुल्क चिकित्सा की । यहीं से पाण्ड़ित्य और जनसेवा की पृष्ठ भूमि लेकर पं० झाबरमल्ल शर्मा जी अपने जीवन में अवतीर्ण हुए।

पण्ड़ित जी ने किसी विद्यालय, महाविद्यालय अथवा विश्वविद्यालय में क्रमबद्ध शिक्षा प्राप्त नहीं की । बचपन में उन्होनें हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेजी भाषा का ज्ञान गाँव में रहकर ही प्राप्त किया। किशोर अवस्था आते ही वे कलकता चले गये और वहां गणनाथ सैन के शिक्षा - निकेतन में संस्कृत, अंग्रेजी और बांग्ला का अध्ययन करने लगे। हिन्दी के प्रति इनका आकर्षण पहले से ही था । [२]

पं० झाबरमल्ल शर्मा जी ने एक ओजस्वी इतिहासकार ,साहित्यकार एवं पत्रकार होने के साथ- साथ सामाजिक कार्यकर्ता की भी अहम भूमिका निभाई । उन्होनें निरन्तर संवाद एवं विभिन्न गोष्ठियों में सम्मिलित होने के बावजूद भी पत्रकारिता एवं लेखन कार्य जारी रखा। पं० झाबरमल्ल शर्मा का साहित्य राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं दासता के विरूद्ध चित्रण है। वे ग्रामीण -परिवेश से मिले संस्कारों से अंग्रेजी सरकार के विरूद्ध संघर्षशील , संवेदनशील, ईमानदार ,आत्मसम्मानी ,सहजभावी, गरीबों के पक्षधर व अन्याय के विरोधी और विचारों के प्रति निष्ठावान रहे। उनकी कृतियों एवं लेखन सामग्री में उनके गुणों का प्रक्षेपण मिलता है।[३] इसी प्रकार इस शोध -प्रबन्ध में पं० झाबरमल्ल शर्मा जी की कृतियों एवं पत्रकारिता की विस्तारपूर्वक व्याख्या की जायेगी। जो उनके द्वारा समय समय पर रचित हुई हैं।

पं० झाबरमल्ल शर्मा सन् १९०७ ई० में प्रकाशित होने वाले "ज्ञानोदय" का सम्पादन करने लगे, साथ ही वहीं पर "मारवाड़ी -बन्धु "नामक समाचार पत्र का भी मित्रता के आधार पर सम्पादन करने लगे । १९०९ ई० में "भारत साप्ताहिक" का सम्पादन करने के लिए बम्बई चले गए । उसके बाद "मारवाड़ी पत्र" सम्पादनार्थ नागपुर चले गये। परन्तु वहां की जलवायु अनुकूल न होने के कारण उन्हें वापिस जसरापुर लौटना पडा। १९१० में स्वास्थ्य ठीक होने पर पुनः कोलकता चले गये और पुन पत्रकारिता का काम करने लगे। १९१२ में उन्होनें पं० राधाकृष्ण मिश्र, पं० शुभराम पुजारी और पं० भूरालाल मिश्र की साझेदारी में गोविन्द प्रैस को खरीद लिया और १९१४ ई० में जन्माष्टमी के दिन "कलकता समाचार पत्र" प्रकाशित करना आरम्भ किया। इसके सम्पादन का भार पं० झाबरमल्ल शर्मा को सौंपा गया। पं० राधाकृष्ण मिश्र इसके मुख्य परामर्शदाता नियुक्त किये गये।[४]

उसी समय यूरोप में प्रथम विश्व - युद्ध (१९१४ -१९१८ ई०) आरम्भ हो गया । इस समाचार पत्र के माध्यम से हिन्दी पाठकों को देश - विदेश के समाचार दूर-दूर तक पहुचाएं। रोलट - एक्ट के विरूद्ध भी इस समाचार पत्र ने खुलकर लेख लिखे । गर्वनर की धमकी

[१] पं० झाबरमल्ल शर्मा अभिनन्दन ग्रंथ पृ० ४५
[२] पुण्य स्मरण : पं० झाबरमल्ल शर्मा - डॉ० मंगला अनुा पृ० ६
[३] हमारे पुरोधा : पं० झाबरमल्ल शर्मा - डॉ हेतु भारद्वाज पृ० १२
[४] ** यशस्वी पत्रकार : पं० झाबरमल्ल शर्मा"-डॉ० पद्मा शर्मा पृ० १

के विरोध में भी पण्ड़ित जी ने अपने सम्पादकीय में ''गर्वनर का गुस्सा '' नामक शीर्षक से लेख निकाला।

१९२५ ई० में पं० दीनदयाल जी की प्रेरणा से ''कलकता समाचार पत्र '' दिल्ली आ गया और ''हिन्दू संसार '' के नाम से इसका नव पर्याय निकालने लगे। १९२६ ई० के अन्त में ''हिन्दू संसार ''पर टिहरी गढ़वाल के गृहमन्त्री ने मानहानि का मुकदमा दायर कर दिया । इनका विवरण में पण्ड़ित जी ने ६००० पुस्तकें और ८०० शीर्षकों के नाम से पत्र - पत्रिकाऐं निकाली हैं। इनको बार - बार सम्मानित किया गया। इन्हें सबसे बड़ा सम्मान अपनी कृति ''अभिनन्दन ग्रन्थ'' पर मिला है । २० मार्च १९८२ को भारत के राष्ट्रपति नीलम संजीव रेड्डी द्वारा पद्म - भूषण से सम्मानित किये गये।[५] इसी तरह ये लेखन कार्य तथा जनहित सेवा करते हुए ४ जनवरी १९८३ को संसार से अलविदा कर गए।

राजनीतिक :-

पं० झाबरमल्ल शर्मा का जन्म उस समय हुआ जब स्वाधीनता के लिए पूरे भारत के लोगों में उत्तेजना बढ़ गई थी । इस समय पं० झाबर मल्ल शर्मा ने अपने कदम पत्रकारिता की तरफ बढाऐं और उस समय सारे देश में तिलक का नारा '' स्वतंन्त्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार हैं और हम इसे लेकर ही रहगें '' गूंज रहा था और लोग स्वतंन्त्रता के लिए अपने जीवन का बलिदान देने को तैयार थे वे अब ''करो या मरो'' के सिद्धान्त पर चलने लगे थे। आजादी के लिए बिटिश सरकार से अपना हक पाने के लिए तैयार थे । सरकारी नौकरियों के लिए याचना बीती -बात होती जा रही थी । देश के गण- मान्य नेता राजनीति के मंच पर आ चुके थे । बंग - भग विरोधी जैसे आन्दोलनों ने आम जनता को झकझोर दिया था । जिससे वे आजादी के अधिकार को प्राप्त करने व भारत माता को गुलामी की जंजीरों से छुडवाना चाहाते थे।[६]

ऐसे कठिन विकट समय में देश में पत्रकारिता का उद्‌य हुआ और बहुत से पत्रकार स्वतंन्त्रता के राजनीतिक मंच पर आ गऐ । उनमें से राजस्थान के एक पत्रकार पं० झाबरमल्ल शर्मा भी राजनीतिक मंच पर दिखाई दिये । इसके अलावा इस राजनीतिक मंच पर वरिष्ठ पत्रकारों में दुर्गाप्रसाद मिश्र ,पंडित गोविन्द नारायण प्रसाद मिश्र ,पंडित माधव प्रसाद मिश्र , बाल मुकुन्द गुप्त आदि थे जिनके सहयोग व मार्गदर्शन से पं० झाबरमल्ल शर्मा ने भी भारत माता को स्वतंन्त्र कराने के लिए लेखनी उठाई ।

पं० झाबरमल्ल शर्मा ने बिटिश शासन की प्रवाह किऐ बिना सच्चाई को उजागर किया । उन्होंने गर्वनर का गुस्सा , ज्ञानोदय , हिन्दू संसार , कलकता समाचार पत्र निकालें । यद्यपि पंडित जी को इन दुष्परिणामों को भुगतना पड़ा । परन्तु उन्होंने डर कर सत्य का साथ नहीं छोड़ा ।

पं० झाबरमल्ल शर्मा ने गॉधी जी के ''सत्याग्रह सिद्धान्त'' के पक्षधर थे । उनके अनुसार सत्याग्रह का सिद्धान्त भारत वर्ष का सनातन सिद्धान्त हैं । विस्मृति के परदे ने उसे भूला दिया । कर्मवीर गॉधी ने उसे अपना आदर्श समझ कर उस परदे को हटा दिया था । राम भक्त हनुमान जी कि तरह भारतवासियों को अपना बल याद आ गया । देश में जागृति पैदा हो गई । इस जागृति को न बंगाल के गर्वनर साहाब और न दिल्ली के ''कर्नल बीड़न ''और न ही ''ओ डायर'' रोक सका । सत्याग्रह सिद्धान्तों की पवित्रता ही अधिक फैलाव का कारण हैं परन्तु उससे यह नतीजा निकला की दिल्ली, अमृतसर , लाहौर, अहमदाबाद और कलकतें की दुघटनाऐं सत्याग्रहियों द्वारा हुई सत्य की हत्या करना हैं । दर असल उपद्रव की जड़ें पुलिस की कडाई हैं ।

पंडित जी का मत था कि न अन्याय न करो, न सहो । जब पंजाब में ''ओडयार '' और डायर कि क्रूरता से हत्या कांड हुआ ,तब कलकता समाचार ने उस स्थिती की निर्भीक होकर आलोचना की । इस प्रकार पंडित जी गॉधीवादी विचार धारा के पोषक, समर्थक एवं प्रचारक थे ।[७]

सामाजिक :-

पं० झाबरमल्ल शर्मा ने भारतीय समाज में फैली बुराईयों ,कुरीतियों एवं अशिक्षा का खुलकर विरोध किया । पंडित जी की कलम किसी कि दबाव में नहीं चलती थी ।

[५] पुण्य स्मरण : पं० झाबरमल्ल शर्मा - डॉ० मंगला अनु पृ० ५

[६] यशस्वी पत्रकार प० झाबरमल्ल शर्मा ,पृ० -२५

[7] गवर्नर का गुस्सा - मारवाड़ियों पर दोषारोपण,कलकता समाचार ,वैशाख कृष्णा १ ,संवत् १९७६

इनके आन्दोलन में " टिहरी गढवाल के होम मेम्बर " एवं गर्वनर का गुस्सा तथा कई सम्पादकीय इसके सबूत हैं[८] पंडित जी के अनुसार देश के विकाश में अशिक्षा सबसे बड़ी रूकावट हैं बगांल के गर्वनर "लार्ड रोनाल्डशे "ने मारवाड़ी व भाटिया जाति के लोगों को फटकारा, कि उन्होनें उपद्रव किया । मारवाड़ी लोगों ने फटकार सिर झुकाकर सुन आये । पंडित जी को यह सविकार्य नहीं हुआ तभी उन्होनें मारवाड़ी जाति के लोगों से कहा " तुम्हारा अशिक्षत होना ,तुम्हारा कमजोरी ,तुम्हारा दब्बुपन ही तुम्हारा अपमान कराता हैं । यदि तुम शिक्षित होते तो , यदि तुम में आत्मिक बल होता तो क्या गर्वनर के दोषारोपण का यर्थात उतर दिऐ बिना तुम नहीं आते । क्यों कि सर कैलाश बोस की खरी -खोटी बातें गर्दन हिला कर सुनते रहें। तुम्हारा दब्बुपन ही भावी उन्नति का बाधक हैं इसलिए संभल जाओ और जाति का प्रचार कर उसे उठाओ।

पंडित जी ने विवाह के समय गाई जाने वाली " गालियों " का भी विरोध किया । पंडित जी ने लेखन के साथ - साथ समाज सुधार के कार्यो में भी रूचि ली । उन्होनें अनेक समाज सुधार आन्दोलनों का सुत्रपात किया ।वे समाज सुधार करने वाली सस्थाओं के मार्ग दर्शक बने ।

कलकता में सून १९२३ में एक नाटक " सामाजिक क्रांति " खेला गया । जिसमें एक मारवाड़ी महिला को फूहड़ रूप में पेश किया गया । यह प्रस्तुतीकरण मारवाड़ी ब्राहमण समाज की प्रतिष्ठा के प्रतिकूल था । तब पंडित जी ने मारवाड़ी ब्राहमण समाज नामक " संस्था " के साथ मिलकर नाटक से उस विशेष दृश्य को निकालने के लिए आन्दोलन छेड़ दिया। परिणाम स्वरूप नाटक का वह हिस्सा निकालना पड़ा और भविष्य में दोबारा न करने को कहा ।[९]

पंडित जी के सहयोग से खेतड़ी में रामकृष्ण मिशन की शाखा की स्थापना की गई। मिशन के कार्यो के लिए राजमहल का बहुत बड़ा हिस्सा भी पंडित जी के प्रयासों से प्राप्त हो सका इसी के फल स्वरूप वर्तमान में बड़ा पुस्तकालय , स्कूल , औषधालय आदि चल रहें हैं ।

पत्रकारिता संबंधी :-

पंडित जी ने बचपन में स्कूली शिक्षा न लेकर के ,बल्कि अपना शिक्षा जगत घर से शुरू किया । उन्होनें अपने जीवन में किसी व्यवसाय को शुरू नहीं किया। उन्होनें अपने जीवन की शुरूआत एक पत्रकार के रूप में की । उन्होनें कलम की सहायता से देश की स्वतंत्रता में भाग लिया । उन्होनें कलम को स्वतंत्रता लिए मिशन बनाया । वर्तमान काल में पत्रकारिता जिस तीव्र गति से विकास हुआ हैं उसी गति से उसका व्यवसायकरण भी हुआ हैं । पंडित जी को इस बात का पूरा अहसास था इस लिए उन्होनें इसके चर्तुमुखी विकास को करते हुऐ कहा कि " आज इस विद्या का जो बहिमुखी विकास हो रहा है मैं कहना चाहूगां कि उसकी नीव इतनी ठोस और मजबूत लगी हैं कि इमारत को निशचिंत होकर कितनी ही ऊंची ले जा सकते हैं

पंडित जी पत्रकारिता के अतीत एंव भविष्य पर प्रकाश डालते हुए कहते है कि "मुझे याद आता थोडें से लोग " ये जो कर्तव्य को कर्तव्य समझकर पत्रकारिता और लेखन में जुटे हुऐ थे अब यह देख कर मन खिल-खिल जाता हैं कि पत्रकारों और लेखकों के दल बादल उमडें हुऐ थे लेकिन मुझे मेरे सहद् - श्रद्धेय गणेष शंकर विद्यार्थी कि बात याद आती है कि - यह मिशन आगे व्यवसाय बन जाऐगा।

पंडित जी पत्रकारिता की कुर्सी को न्यायधीश कि कुर्सी मानते थे । कलकता समाचार में कार्य करते हुऐ पंडित जी ने अपने इस विशवास और मान्यता को कार्यरूप से परिणत कर दिया ।अपनी पत्रकारिता के बल पर सन् १९७२ में पंडित जी ने अनेक अविस्मरणीय आन्दोलन चलाऐ, जिनमें घी में मिलावट के विरूद्ध धृत आन्दोलन प्रमुख था । इस आन्दोलन को जन आन्दोलन बनाने का काम "कलकता समाचार "ने किया । इस आन्दोलन से इस पत्र की बिक्री प्रति दिन साठे तीन सौ तक हो गई ।[१०] पंडित जी जेल की परवाह किए बिना अपने कर्तव्य का पालन का पालन करते रहें । अपनी पत्रकारिता के बल

[8] यशस्वी पत्रकार प० झाबरमल्ल शर्मा ,पृ० -२६

[9] गवर्नर का गुस्सा - मारवाड़ियों पर दोषारोपण,कलकता समाचार -संपादकिय

[10] भाषण के अंश- अभिनंदन समारोह , जयपुर के अवसर पर ।

पर सन् १९७२ में पंडित जी के सामने सम्पादकीय का कार्य करते समय अनेक कठिनाई आई ,पर वे कमजोर नहीं पडें ।[११] कुछ समय बाद पंडित जी ने दिल्ली में एक दूसरे समाचार पत्र " हिन्दू संसार " के सम्पादन का कार्य किया । जिसमे १२ फरवरी और २४ मई सन् १९२६ को गुमनाम चिठिठ्यां छपी ं जिनके शीर्षक था " रावल के प्रति दुर्व्वहार टेहरी नरेश से निवेदन "टिहरी में क्या हो रहा है। चक्रधर शाही का दौरा " आदि । इसके अलावा बद्रीनाथ मन्दिर से संबंधित लेख छपे । इन लेखों और चिठिठ्यों में टेहरी गठवाल राज्य के होम -मेम्बर राय बहादुर पं० चक्रधर जुयाल के आचरण कि सार्वजनिक हित को लक्ष्य में रख कर आलोचना की गई थी । जिससे चिड कर जुयाल साहब ने पं० झाबरमल्ल शर्मा ,बाबू राम मिश्र और मुद्रक बनारसी दास शर्मा पर देहरादून की अदालत में मान हानी का दावा कर दिया । इस मुक्दमें में इलाहाबाद के हाईकोर्ट में अपील की ,जिसमें तीनों को जेल हो गई ।

पंडित जी ने दो लेखों के अलावा सन् १९०५ में केवल १७ वर्ष की आयु में पंडित जी का प्रथम लेख पंडित दुर्गा प्रसाद मिश्र के " भारत मिश्र " में प्रकाशित हुआ । पंडित जी का वास्तविक पत्रकार का जीवन १९०७ में " "ज्ञानोदय "से शुरू हुआ । इसमें सभी विषयों से संबंधित सामग्री प्रकाशित होती थी । इसके बाद पंडित जी ने मथुरा निवासी पंडित गोरी शंकर पाठक " भारत के सम्पादक का कार्यभार सन् २१ जुलाई १९०९ को अपने हाथों में ले लिया और पंडित जी कलकता सें बंबई चले गऐ ।

२४ नवम्बर १९०९ से मुख्य पृष्ट पर नक्शे के स्थान पर पत्र का नाम " भारत " मोटे अक्षरो में दिया जाने लगा तथा उनके नीचे पत्र का कार्यक्षेत्र बताने वाला निम्न पद्य हैं :-

" औनत्यं परिलीयन् बहुविधं हिन्दी प्रचारेलषन् ।
सम्पूर्ण खब्रराजनीति मधुना व्यक्तमं समालोचनम् चयन।।
प्राचयैण समामितः सुविषयान् देषस्य सेवांदिषन् ।
चित्रेहस्यि मुदायन बुध दिने प्राप्तों जंनि भारतः "।।[१२]

पंडित जी १९०९ में " भारत " समाचार पत्र के अलावा " मारवाड़ी " साप्ताहिक के सम्पादक भी बने । इस अखबार के मालिक सेठ रामनारायण राठी थे । इसके बाद पंडित जी ने चैत्र शुक्ल १९७० में अग्रवाल मासिका का प्रकाशन किया । पंडित जी ने इस पत्र का सम्पादन मित्रता के नाते बिना पारिश्रामिक के किया ।

पंडित जी ने पत्रकारिता को व्यक्तिगत राग -द्वेष से परे समाज हित , देश सेवा और स्वतन्त्रता प्राप्ति का आधार बनाया । पंडित जी अपने समय के दिग्गज पत्रकारों के साहचर्य के कारण तथा भारीय इतिहास व संस्कृति के अध्येता होने के कारण पत्रकारिता के क्षेत्र में जिन मापदड़ों की स्थापना की वे पत्रकारों के लिए आज अुकरणीय है।

साहित्यक :-

शुकदेव पांड़े ने पं० झाबरमल्ल शर्मा को " राजस्थानी साहित्य एंव सस्कृति के जीवित कोष" कहा था ।पं० झाबरमल्ल शर्मा जी ने द्विवेदी युगीन साहित्यकार थे । उन्होनें माधव मिश्र निंबध माला " , गुप्त निबन्धावली ,गुलेरी गरिमा " आदि ग्रंथ पंडित जी द्वारा सम्पादित बेजोड़ ग्रन्थ हिन्दी साहित्य की अमूल्य नीधि हैं ।[१३]
पं० झाबरमल्ल शर्मा द्वारा लिखे गऐ लेख अपने में एक वृहत आशय लिये हुए , देश काल की सीमा का लांघकर मानव की गहराई को सरलता से स्पर्श करते हैं ।

पं० झाबरमल्ल शर्मा जी ने " हिन्दू " के माध्यम से दिल्ली में हिन्दी भाषा का प्रचार कियाा । हिन्दू संसार से पूर्व दिल्ली से उर्दू दैनिक " तेज और वेतन " निकला करते थे । जिसके कारण हिन्दू घरों में भी उर्दू का बोलबाला हो गया । बोल - चाल में उर्दू भाषा का प्रयोग बढ़ता जा रहा था । ऐसे में "हिन्दू संसार " ने उर्दू की प्रवाह को नियंत्रित कर हिन्दी भाषा के प्रचार का कार्य किया ।

पं० झाबरमल्ल शर्मा की भाषा मुहॉवरेंदार ,सरल ,सजीव ,प्रंजाल, और शालीन हैं पंडित जी लेखक ,सम्पादक और आलोचक की दृष्टि भी रखते थे । उन्होनें आलोचक के रूप में हिन्दी साहित्य के बड़े -बड़े विद्वानों को भी नही बख्शा । पंडित जी कहते हैं कि

[11] यशस्वी पत्रकार प० झाबरमल्ल शर्मा ,पृ० -२७
[12] यशस्वी पत्रकार प० झाबरमल्ल शर्मा ,पृ० -१६
[13] यशस्वी पत्रकार प० झाबरमल्ल शर्मा ,पृ० -२६

हमें तटस्थ भाव से साहित्य और साहित्यकार का मूल्याकन करना चाहिए । उनके अनुसार संस्मरणीय व्यक्तियों के योगदान से इतिहास के पृष्टों से वंचित करना एक घोर अनुचित कर्म है।[१४]

इस तरह हम कह सकते हैं कि पंडित जी ने साहित्यकार के रूप में उल्लेखनीय योगदान दिया । उन्होनें हिन्दी साहित्य को कई अनमोल ग्रंथ दिया जैसे :- अभिनन्दन ग्रंथ । पंडित जी ने लेखकों और कवियों के रचना संसार को प्रकाश में लाकर हिन्दी साहित्य का उपकार किया ।[१५]

लोक संस्कृति :-

पंडित जी लोक संस्कृति के पीर थे । वे लोक संस्कृति के उत्थान के लिए तत्पर रहते थे । उन्होनें लोक गीतों , लोक देवताओं ,लोकोक्तियों और लोक वीरों के चरित्र व गरिमा को उजागर किया । इन्होनें खेतड़ी में रामकृष्णमिषन व विवेकानन्द संस्थान की स्थापना करवाई । [१६]

पंडित जी का ''राजस्थान का लोक देवता'' साहित्य बहुत लम्बा एंव अन्तिम लेख था जो कि कई किश्तों में छपा था । यह लेख पंडित जी की लोक संस्कृति रूचि को दर्शाता है। इस तरह हम पंडित जी के लेखों में हम जनपदीय संस्कृति के दर्शन करते हैं कहीं गणगौर उत्सव का उत्साह हैं तो कहीं देवालयों का ऐतिहासिक विवेचना हें ।[१७]

इतिहास :-

पंडित जी का अध्ययन के क्षेत्र में प्रिय विषय इतिहास था । उन्होनें अपनी इतिहास की पुस्तकों में सर्वप्रथम ''कर्नल टाड़ ''के इतिहास का जिक्र सबसे पहले किया हैं उन्होनें अपने इतिहास के क्षेत्र को एक दायरे में नहीं रखा । उन्होनें राजपरिवारों की वंशावलियों और युद्धों के साथ-साथ तत्काली धर्म ,समाज ,सभ्यता ,साहित्य कला ,संस्कृति आदि को प्रकाशित किया है।

पंडित जी ने राजस्थान का इतिहास ,खेतड़ी का इतिहास, सीकर का इतिहास, यूरोप का महायुद्ध आदि पुस्तकें लिखी। इसके अलावा '' हिन्दी साहित्य क्षेत्र में अभी तक इतिहास के स्थान की पूर्ति नहीं हुई इसका कारण यह है कि हिन्दी के वर्तमान साहित्य का अभी आरम्भ युग हैं इसी से काशी को चटीलें उपन्यासों का जितना लोगों ने आदर किया ,उतना इतिहास का नहीं हुआ । इतिहास की बातों और उसकी आवश्यकताओं को समझने के लिए शिक्षा का प्रचार आवश्यक हैं।

उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि पंडित जी के सम्पादक ,साहित्यकार ,पत्रकार , इतिहासकार एंव समाज सुधार आदि सभी रूप एक से बढ़कर एक हैं ।

[14] प० झाबरमल्ल शर्मा अभिनंदन ग्रंथ-राजस्थान मंच ,पृ० -४३

[15] यशस्वी पत्रकार प० झाबरमल्ल शर्मा ,पृ० -३०

[16] यशस्वी पत्रकार प० झाबरमल्ल शर्मा ,पृ० -३०

[17] प० झाबरमल्ल शर्मा अभिनंदन ग्रंथ-राजस्थान मंच ,पृ० -५२